Written by देवमणि पांडेय
Wednesday, 12 October 2011 10:05

मुझे लगता है कि □क अच्छा रचनाकार या क्लाकार □क साथ तीन काल खंडों में जीता है□ उसके□न और हुनर में गुज़रे हु□ ज़माने की अनुगूँज होती है□ मौजूदा दौर की धड़कन होती है और आने वाले व□त के□दमों की आहट होती है□ ये □ाबलियित जगजीत सहि के□न और श□सयित में ब□बी नज़र आती थी□

अपने इसी हुनर के दम पर उन्होंने पूरी दुनिया को यानी जग को जीत लिया और अपने नाम जगजीत सहि को सार्थक बना दिया□ अपने इसी आला □न के चलते वे लगातार तीन-तीन पीढ़ियों के दिलों पर राज करते रहे□

□□□□□ □□□□□□□: पछिले माह 9 सतिम्बर 2011 को उनसे मुम्बई के□क समारोह में मुला□ात हुई थी□ गायकि रश्मिश्री के भक्ति अलबम 'शेरावाली की नगरिया' का लोकार्पण करने के लि□ जगजीत सहि बतौर मुख्य अतथि पिधारे थे□ संगीत के समंदर में कितने उतार-चढ़ाव आ□ मगर युवा पीढ़ी में आज भी उनका क्रेज बर□रार है□ समारोह □त्म होने के बाद वे आधे घंटे तक नौजवानों के साथ फोटो खचिवाते रहे□ वे इतने तरो-ताज़ा और स्मार्ट नज़र आ रहे थे कि जब 23 सतिम्बर को उनके ब्रेन हैमरेज की □बर आई तो □क बारगी किसी को य□ीन ही नहीं हुआ□ यही शायद उनकी ज़िंदगी का आ□िरी समारोह था, जसिमें उन्होंने जमकर समोसे और मठिाइयाँ खाईं, कई युवा क्लाकारों को मुक्तकंठ से आशीर्वाद दिया और सबसे मज़ाकिया लहजे में गु□तगू करते रहे□ फिर वो व□त भी आया जब 10 अक्टूबर को उन्होंने इस दुनिया को हमेशा के लि□ अलवदिा कह दिया□

□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□:□जगजीत सहि 1965 में मुम्बई आ ग□ थे□ 1967 में उनकी दोस्ती गायक राजेंद्र मेहता से हो गई□ 1965 से 1969 तक दोनों ने □क साथ कई कार्यक्रम कि□ इनमें सबसे उल्लेखनीय आयोजन था- 'ग़ालबि से गुलज़ार तक'□ इसमें मीरो-ग़ालबि से लेकर गुलज़ार तक की ग़ज़लों के ज़रि□ ग़ज़ल के इतहिास को बड़ी □ूबसूरती से पेश किया गया था□ इस कार्यक्रम की तैयारी के दौरान राजेंद्र मेहता ने मशहूर संगीतकार नौशाद से मुला□ात की और उनसे मशवरि किया कि ग़ज़लों को कम्पोज़ कैसे किया जा□□ नौशाद ने कहा कि ग़ज़ल इतनी □ूबसूरत चीज़ है कि उसे गाने की ज़रूरत ही नहीं है□ उसे तो बस मुहब्बत के साथ पेश करने की ज़रूरत है□ यानी जैसे तहत में ग़ज़ल को पढ़ा जाता है उसी तरह गुनगुनाकर ग़ज़ल को पेश कर दिया जा□□ बेहतर ये होगा कि ग़ज़ल को गुनगुनाने से पहले दस बार तहत में पढ़ा जा□ ताकि उसका मानी खुल जा□-

□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ /□□ □□ □□□□□□□□ □□ /□□ □□□□□□
□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ /□□□□ □□ □□ □□□□□□

नौशाद साहब का मशवरि राजेंद्र मेहता और जगजीत सहि को बहुत पसंद आया□ इन दोनों ने हमेशा सही जगह पर पॉज देकर ग़ज़लों को उसी तरह कम्पोज़ किया जैसे वे पढ़ी जाती हैं□ आपने देखा होगा कि जगजीत सहि ने कभी भी ग़ज़ल गायकि में रागदारी का कमाल दखिाने की कोशशि नहीं की□ उनकी ग़ज़ल गायकि बेग़म अ□्तर, कुंदनलाल सहगल और तलत महमूद की रवियाती गायकि से अलग रंग-रूप लेकर सामने आई□ उन्होंने वायलनि, गटिार और की-बोर्ड जैसे आधुनकि वाद्य यंत्रों के ज़रि□ ग़ज़ल गायकि के हुस्न को नखिारा और देखते-ही देखते संगीत के आकाश पर सतिारे की तरह जगमगाने लगे□ उनकी इस कामयाबी ने ग़ज़ल के सामयीन में ज़बरदस्त इज़ा□ा कयिा□

□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□: शुरुआती दौर में जगजीत सिंह दाढ़ी-मूँछ रखते थे। ये बात काफ़ी दूर तक फैल गई थी कि चित्रा सिंह की मुहब्बत में जगजीत सिंह ने अपनी दाढ़ी-मूँछ साफ़ करा दी। सचाई ये है कि ग़ज़ल सिंगर बनने के जुनून में जगजीत सिंह मिस्टर क्लीन बने। मुम्बई में शास्त्रीय संगीत की एक बहुत प्रतिष्ठित संस्था है सुर सिंगार संसद। इसके मंच को पूरे देश के कलाकार संगीत के एक तीर्थ की तरह सम्मान देते हैं। सन 1967 में पहली बार इस मंच पर ग़ज़लें पेश करने के लिए राजेंद्र-नीना मेहता की जोड़ी को आमंत्रित किया गया। ग़ज़ल की इस पहली जोड़ी को ग़ज़ल प्रेमियों ने बहुत पसंद किया। जगजीत सिंह ने संस्था के अध्यक्ष पं. बृजनारायण से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा- सरदार से ग़ज़ल कौन सुनेगा। बेहतर होगा कि तुम अपनी दाढ़ी-मूँछ साफ़ करा दो। जगजीत सिंह ने उनकी बात मान ली। ग़ज़ल का कार्यक्रम पेश किया और छा गए। 1969 में चित्रा सिंह से प्रेम विवाह के बाद जगजीत सिंह ने उनके साथ जोड़ी बनाई जो ग़ज़ल की दुनिया की बेमिसाल जोड़ी साबित हुई।

Written by देवमणि पांडेय
Wednesday, 12 October 2011 10:05

□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□: मेरे दोस्त शायर सुदर्शन □ा□रि अक्सर जगजीत सहि का ज़िक्र छेड़ देते थे□ दोनों की पढ़ाई-लिखाई जालंधर में हुई थी और मुम्बई में उनकी दोस्ती परवान चढ़ी□ □ा□रि साहब की शायरी को जगजीत सहि इतना अधिक पसंद करते थे उन्होंने अपने □क अलबम 'द लिटेस्ट' में सारे कलाम □ा□रि साहब से लिखा□□ सन 1982 में रलीज़ इस अलबम ने कामयाबी का कीर्तमान रच दिया□ इसका □क नग़्मा जगजीत सहि की स्थायी पहचान बन गया-

□□ □□□□ □□ □□ □□, □□ □□□□□ □□ □□ □□, □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□
□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□

उस समय शायरों को □क ग़ज़ल के लि□ प्राय□ हज़ार-दो हज़ार मेहनताना मलिता था□ जगजीत सहि ने □ा□रि साहब से पूछा- 'आप रॉयल्टी लेना पसंद करेंगे या नक्द चाहि□?' □ा□रि साहब ने □ौरन कहा- 'मुझे □क लाख नक्द चाहि□'□ उस समय यह का□ी बड़ी रकम थी मगर जगजीत सहि ने □च□मवी से उन्हें □क लाख रुप□ दलिा□□ जब □च□मवी ने □ा□रि साहब के लखि भक्ति अलबम 'हे राम' को दुबारा जारी किया तो जगजीत सहि ने उन्हें दुबारा भारी-भरकम धनराशि का भुगतान कराया□ □रीब 20 साल पहले □ा□रि साहब ने मुम्बई में मकान □रीदने का इरादा किया और जगजीत सहि से मदद माँगी□ जगजीत सहि ने हँसते हु□ कहा- 'दस लाख दूँगा मगर बदले में शराब पर दस ग़ज़लें चाहि□□' □ा□रि शाहब ने लिखकर दे दिया और मकान □रीद लिया□ जगजीत सहि ने अगले अलबम में उनकी □क ग़ज़ल शामलि की -

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□
□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□

ग़ज़ल के गुलशन ने कई रंग बदले□ रॉक, पॉप और रैप के चलते कई कलाकार फसिले मगर जगजीत सहि कभी भी भटकाव का शकिर नहीं हु□□ वे हमेशा ग़ज़ल के हमस□र बने रहे□ दुनयिा के हर शायर की □्वाहशि रही है कि जगजीत सहि उन्हें गा□ं□ पछिली मुला□ात यानी 9 सतिम्बर को उन्होंने अपनी सेक्रेटरी पारुल चावला को बुलाकर कहा- पांडेय जी को अपना ई-मेल दे दो और इनसे चार-पाँच ग़ज़लें मँगा लो□ मैंने ग़ज़लें तो भेज दीं मगर ये □्वाब अधूरा रह गया-

□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□
□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□. □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ "□□□ □□ □□□□□" □□ "□□□□□ □□ □□□□□□" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□. □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□. □□□□ □□□□□□□□ **devmanipandey@gmail.com** □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□.